अध्याय 51.

जन्म

1. जन्म किसे कहते हैं ?

पूर्व शरीर को त्यागकर नवीन शरीर धारण करने को जन्म कहते हैं।

2. जन्म के कितने भेद हैं ?

जन्म के तीन भेद हैं –

1. **सम्मूर्च्छन जन्म** – जो चारों ओर के वातावरण से शरीर के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करते हैं, वह सम्मूर्च्छन जन्म है। जैसे –चुम्बक अपने योग्य लोह कण को ग्रहण करता है।
2. **गर्भ जन्म** – माता के उदर में रज और वीर्य के परस्पर गरण अर्थात् मिश्रण को गर्भ कहते हैं। अथवा माता के द्वारा उपभुक्त आहार के गरण होने को गर्भ कहते हैं। और इससे होने वाले जन्म को गर्भ जन्म कहते हैं।
3. **उपपाद जन्म** –देव–नारकियों के उत्पत्ति स्थान विशेष को उपपाद और उनके जन्म को उपपाद जन्म कहते हैं। (सर्वार्थसिद्धि, 3/31/322)

3. गर्भ जन्म के कितने भेद हैं ?

गर्भ जन्म के तीन भेद हैं –

1. **जरायुज** – जन्म के समय प्राणियों के ऊपर जाल की तरह खून और माँस की जाली सी लिपटी रहती है, उसे जरायु कहते हैं और जरायु से उत्पन्न होने वाले जरायुज कहलाते हैं। जैसे–गाय, भैंस, मनुष्य, बकरी आदि।
2. **अण्डज** – जो नख की त्वचा के समान कठिन (कठोर) है, गोल है और जिसका आवरण शुक्र और शोणित से बना है, उसे अण्ड कहते हैं और जो अण्डों से पैदा होते हैं, वे अण्डज कहलाते हैं। जैसे–कबूतर, चिड़िया, छिपकली और सर्प आदि।
3. **पोत** – जो जीव जन्म लेते ही चलने–फिरने लगते हैं, उनके ऊपर कोई आवरण नहीं रहता है, उन्हें पोत कहते हैं। जैसे–हिरण, शेर आदि।

नोट–जरायुज में माँस की थैली में उत्पन्न होता है और अण्डज में अण्डे के भीतर उत्पन्न होकर बाहर निकलता है वैसे पोत में किसी आवरण से युक्त नहीं होता, इसलिए पोतज नहीं कहलाता है, पोत कहलाता है। (राजवार्तिक, 3/33 /1–5)

4. कौन से जीवों का कौन–सा जन्म होता है ?

देव और नारकियों का	–	उपपाद जन्म।
मनुष्यों और तिर्यञ्चों का	–	गर्भ जन्म और सम्मूर्च्छन जन्म।
1, 2, 3, 4 इन्द्रियों का	–	सम्मूर्च्छन जन्म।

लब्धि अपर्याप्तक मनुष्य एवं तिर्यञ्चों का – सम्मूर्च्छन जन्म।

5. योनि किसे कहते हैं ?

जिसमें जीव जाकर उत्पन्न हो, उसका नाम योनि है।

6. योनि और जन्म में क्या भेद है ?

योनि आधार है और जन्म आधेय है।

7. योनि के मूल में कितने भेद हैं ?

योनि के मूल में 2 भेद हैं। गुण योनि और आकार योनि। गुण योनि के मूल में 9 भेद और उत्तर भेद 84 लाख हैं।

गुण योनि के 9 भेद इस प्रकार हैं :-

1. सचित्त योनि – जो योनि जीव प्रदेशों से अधिष्ठित हो।
2. अचित्त योनि – जो योनि जीव प्रदेशों से अधिष्ठित न हो।
3. सचित्ताचित्त योनि – जो योनि कुछ भाग में जीव प्रदेशों से अधिष्ठित हो और कुछ भाग जीव प्रदेशों से अधिष्ठित न हो।
4. शीत योनि – जिस योनि का स्पर्श शीत हो।
5. उष्ण योनि – जिस योनि का स्पर्श उष्ण हो।
6. शीतोष्ण योनि – जिस योनि का कुछ भाग शीत हो, कुछ भाग उष्ण हो।
7. संवृत योनि – जो योनि ढकी हो।
8. विवृत योनि – जो योनि खुली हो।
9. संवृतविवृत योनि – जो योनि कुछ ढकी हो कुछ खुली हो।

8. आकार योनि के कितने भेद हैं ?

आकार योनि के तीन भेद हैं –

1. **शंखावर्त** – इसमें गर्भ रुकता नहीं है।
2. **कूर्मोन्नत** – इसमें तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती, अर्द्धचक्रवर्ती, बलदेव आदि उत्पन्न होते हैं।
3. **वंशपत्र** – इसमें शेष सभी गर्भ जन्म वाले जीव जन्म लेते हैं।

9. कौन से जीव की कौन-सी योनि होती है ?

देव और नारकियों की अचित्त योनि होती है, क्योंकि उनके उपपाद देश के पुद्गल प्रचयरूप योनि अचित्त है। गर्भजों की मिश्र योनि होती है, क्योंकि उनकी माता के उदर में शुक्र और शोणित अचित्त होते हैं, जिनका सचित्त माता की आत्मा से मिश्रण है इसलिए वह मिश्रयोनि है। संमूर्च्छनों की तीन प्रकार की योनियाँ होती हैं। किन्हीं की सचित्त योनि होती है अन्य की अचित्त योनि होती है और दूसरों की मिश्र योनि होती है। साधारण शरीर वाले जीवों की सचित्त योनि होती है, क्योंकि ये एक-दूसरे के आश्रय से रहते हैं। इनसे अतिरिक्त शेष संमूर्च्छन जीवों के अचित्त और मिश्र दोनों प्रकार की योनियाँ होती हैं। देव और नारकियों की शीत और उष्ण दोनों प्रकार की योनियाँ होती हैं; क्योंकि उनके कुछ उपपादस्थान शीत हैं और कुछ उष्ण। अग्निकायिक जीवों की उष्ण योनि होती है। इनसे अतिरिक्त जीवों की योनियाँ तीनों

प्रकार की होती हैं। देव, नारकी और एकेन्द्रियों की संवृत योनियाँ होती हैं। विकलेन्द्रियों की विवृत योनि होती है तथा गर्भजों की मिश्र योनियाँ होती हैं। (सर्वार्थसिद्धि, 2/32/324)

सुविधा के लिए तालिका देखिए-

सचित्त योनि	–	साधारण शरीर
अचित्त योनि	–	देव, नारकी
मिश्र योनि	–	गर्भज
अचित्त और मिश्र योनि	–	शेष संमूर्च्छनों की
शीत और उष्ण योनि	–	देव, नारकी
उष्ण योनि	–	अग्निकायिक
शीत, उष्ण और मिश्रयोनि	–	इनके अतिरिक्त
संवृत योनि	–	देव, नारकी, एकेन्द्रिय
विवृत योनि	–	विकलेन्द्रिय एवं शेष संमूर्च्छनों की
मिश्र योनि	–	गर्भजों की

10. चौरासी लाख योनि कौन सी हैं ?

चौरासी लाख योनि निम्न हैं-

1.	नित्य निगोद	7 लाख
2.	इतर निगोद	7 लाख
3.	पृथ्वीकायिक	7 लाख
4.	जलकायिक	7 लाख
5.	अग्निकायिक	7 लाख
6.	वायुकायिक	7 लाख
7.	वनस्पतिकायिक	10 लाख
8.	दो इन्द्रिय	2 लाख
9.	तीन इन्द्रिय	2 लाख
10.	चार इन्द्रिय	2 लाख
11.	नारकी	4 लाख
12.	तिर्यञ्च	4 लाख
13.	देव	4 लाख
14.	मनुष्य	14 लाख
	कुल योग	84 लाख

11. कुल किसे कहते एवं उसके कितने भेद हैं ?

योनि को जाति भी कहते हैं और जाति के भेदों को कुल कहते हैं। कुल 199.5 लाख कोटि होते हैं।

पृथ्वीकायिक	22 लाख कोटि
जलकायिक	7 लाख कोटि
अग्निकायिक	3 लाख कोटि
वायुकायिक	7 लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	28 लाख कोटि
दो इन्द्रिय	7 लाख कोटि
तीन इन्द्रिय	8 लाख कोटि
चार इन्द्रिय	9 लाख कोटि
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों में	
जलचर	12.5 लाख कोटि
थलचर	19 लाख कोटि
नभचर	12 लाख कोटि
नारकी	25 लाख कोटि
देव	26 लाख कोटि
मनुष्य	14 लाख कोटि
	कुल 199.5 लाख कोटि

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. पञ्चेन्द्रिय में जन्म के तीनों भेद हैं।
2. चार इन्द्रिय में जन्म का एक भेद नहीं है।
3. जन्म और योनि में आधार-आधेय का सम्बन्ध है।
4. पञ्चेन्द्रिय की 26 लाख योनि हैं।
5. बाहुबली कामदेव का जन्म कूर्मोन्नत योनि में हुआ था ।
6. रावण का जन्म शंखावर्त योनि में हुआ था।
7. चींटी का जन्म वंश पत्र योनि में हुआ था।
8. पृथ्वीकायिक की संवृत योनि होती है।
9. छिपकली का जन्म अण्डज नहीं है।
10. बिल्ली का जन्म सचित्ताचित्त योनि में हुआ था।
11. ब्राह्मी का जन्म कूर्मोन्नत योनि में हुआ था।
12. देव की अचित्त, शीत, उष्ण एवं संवृत योनि नहीं होती है।

अन्यत्र खोजिए -

1. विग्रहगति में जीव का नवीन जन्म प्रारम्भ हो जाता है या मिश्र अवस्था से ?
2. तीर्थङ्करों के चिह्न वाले जीव कितने लाख योनियों में गर्भित हो सकते हैं ?
3. मोरनी किस प्रकार गर्भ धारण करती है ?